ॐ

मङ्गलाष्टकम्

(शार्दूलविक्रीडितम् छन्द)

श्री पंचपरमेष्ठी वंदन

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः
आचार्याः जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः,
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मंगलम्॥

अर्थ :- इन्द्रों द्वारा जिनकी पूजा की गई, ऐसे अरिहन्त भगवान्, सिद्ध-पद के स्वामी ऐसे सिद्ध भगवान्, जिनशासन को प्रकाशित करनेवाले आचार्य, जैन-सिद्धांत को सुव्यवस्थित पढ़ानेवाले उपाध्याय, रत्नत्रय के आराधाक साधु-ये पाँचों परमेष्ठी प्रतिदिन हमारे पापों को नष्ट करें और हमें सुखी करें।

श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट- प्रद्योत - रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगीजनैश्च पंचगुरवः कुर्वन्तु ते मंगलम्॥१॥

अर्थ :- शोभायुक्त और नमस्कार करते हुए देवेन्द्रों और असुरेन्द्रों के मुकुटों के चमकदार रत्नों की कान्ति से जिनके श्रीचरणों के नखरूपी चन्द्रमा की ज्योति स्फुरायमान हो रही है, और जो प्रवचनरूप सागर की वृद्धि करने के लिए स्थायी चन्द्रमा हैं एवं योगीजन जिनकी स्तुति करते रहते हैं, ऐसे अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु- ये पाँचों परमेष्ठी हमारे पापों को क्षय करें और हमें सुखी करें।

सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री - नगराधिनाथ - जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्म सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥२॥

अर्थ :- निर्मल सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र- ये पवित्र रत्नत्रय हैं। श्रीसम्पन्न मुक्तिनगर के स्वामी भगवान् जिनदेव ने इसे 'अपवर्ग (मोक्ष) को देनेवाला' कहा है। इस त्रयी के साथ धर्म-सूक्तिरूपी अमृत (जिनागम), समस्त जिन-प्रतिमा और लक्ष्मी का आकारभूत जिनालय मिलकर चार प्रकार का धर्म कहा गया है; वह हमारे पापों का क्षय करे और हमें सुखी करे।

नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रिभुवन ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर - प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥३॥

अर्थ :- तीनों लोकों में विख्यात और बाह्य तथा अभ्यन्तर लक्ष्मी से सम्पन्न ऋषभनाथ भगवान् आदि २४ तीर्थंकर, श्रीमान् भरतेश्वर आदि १२ चक्रवर्ती, ९ नारायण, ९ प्रतिनारायण और ९ बलभद्र- ये ६३ शलाका महापुरुष हमारे पापों का क्षय करें और हमें सुखी करें।

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगता प श्च ये,
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशला येऽष्टौ-विधाश्चारणाः।
प श्वज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥४॥

अर्थ :- सभी औषधि ऋद्धिधारी, उत्तम तप से वृद्धिगत पाँच अष्टांग महा. निमित्तज्ञानी, आठ प्रकार की चारण ऋद्धि के धारी, पाँच प्रकार की ज्ञान ऋद्धियों के धारी, तीन प्रकार की बल ऋद्धियों के धारी, बुद्धि ऋद्धिधारी, - ऐसे सातों प्रकारों के जगत्-पूज्य गणनायक मुनिवर हमारा मंगल करें।

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे
शैले ये मुनजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥५॥

अर्थ :- ज्योतिषी, व्यंतर, भवनवासी और वैमानिकों के आवासों के, मेरुओं, कुलाचलों, जम्बू वृक्षों और शाल्मलि वृक्षों, वक्षारों, विजयार्ध पर्वतों, इक्ष्वाकार पर्व. तों, कुंडलवर (तथा रुचिकवर), नंदीश्वर द्वीप, और मानुषोत्तर पर्वत के सभी अकृत्रिम जिन-चैत्यालय हमारे पापों का क्षय करें और हमें सुखी बनावें।

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिजिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥६॥

अर्थ :- भगवान् ऋषभदेव की निर्वाणभूमि कैलासपर्वत, महावीर स्वामी की पावापुर, वासुपूज्य स्वामी (राजा वसुपूज्य के पुत्र) की चम्पापुरी, नेमिनाथ स्वामी की ऊर्जयन्त पर्वत-शिखर, और शेष बीस तीर्थंकरों की श्री सम्मेदशिखर पर्वत, जिनका अतिशय और वैभव विख्यात है - ऐसी ये सभी निवार्ण-भूमियाँ हमें निष्पाप बनावें और हमें सुखी करें।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥७॥

अर्थ :- तीर्थकरों के गर्भकल्याणक, जन्माभिषेक कल्याणक, दीक्षा कल्याणक, केवलज्ञान कल्याणक और कैवल्यपुर प्रवेश (निर्वाण) कल्याणक के देवों द्वारा सम्पादित महोत्सव हमें सर्वदा मांगलिक रहें।

सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवाः यान्ति वशं प्रसन्नमनसः किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥८॥

अर्थ :- धर्म के प्रभाव से सर्प माला बन जाता है, तलवार फूलों के समान कोमल बन जाती है, विष अमृत बन जाता है, शत्रु प्रेम करनेवाला मित्र बन जाता है और देवता प्रसन्न मन से धर्मात्मा के वश में हो जाते हैं। अधिक क्या कहें, धर्म से ही आकाश से रत्नों की वर्षा होने लगती है। वही धर्म हम सबका कल्याण करे।

[माहात्म्य : उपसंहार]

इत्थं श्रीजिन-मंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-सम्पत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैः धर्मार्थ-कामान्विताः,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय-रहिता निर्वाण-लक्ष्मीरपि॥

अर्थः-सौभाग्य-सम्पत्ति को प्रदान करनेवाले इस श्री जिनेन्द्र-मंगलाष्टक को जो सुधी तीर्थंकरों के पंच कल्याणक के महोत्सवों के अवसर पर तथा प्रभातकाल में भावपूर्वक सुनते और पढ़ते हैं, वे सज्जन धर्म, अर्थ और काम से समन्वित लक्ष्मी के आश्रय बनते हैं और पश्चात् अविनश्वर मुक्तिलक्ष्मी को भी प्राप्त करते हैं।

नोट : 'कुर्वन्तु ते मंगलम्' की जगह 'कुर्वन्तु नः मंगलम्' या 'कुर्वन्तु में मंगलम्' का पाठ भी स्वयं के लिए करें।

***